न्याय दीपिका: वस्तु के निर्णय की वैज्ञानिक और तार्किक पद्धति

सत्य की खोज और आत्मा की पहचान के तीन मूलभूत आधार (उद्देश्य, लक्षण और परीक्षा)

www.JainKosh.org

लोक (व्यवहार) और शास्त्र—दोनों में किसी भी वस्तु को समझने की यही एकमात्र प्रामाणिक पद्धति है।

www.JainKosh.org

उद्देश्य: विवेचनीय वस्तु को मात्र नाम देना

विवेचनीय वस्तु का नाम मात्र कथन करना।

प्रयोजन

वस्तु का ज्ञान कराना। हम किस विषय पर बात करने वाले हैं, यह तय करना।

उदाहरण

यह ग्रंथ न्याय दीपिका है। या हमें आत्मा को समझना है।

बिना नाम लिए हम किसी भी वस्तु के लक्षण या परीक्षा की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ा सकते।

www.JainKosh.org

लक्षण: मिली-जुली भीड़ में से अपनी वस्तु को अलग करना

व्यतिकीर्ण वस्तु व्यावर्तक हेतुः लक्षणम्

मिली-जुली अनेक वस्तुएं
(व्यतिकीर्ण वस्तु)

अलग करने वाला
विशेष चिन्ह
(व्यावर्तक हेतु)

लक्षण
(सटीक पहचान)

उदाहरण: पुस्तकालय के अनेक ग्रंथों में से 'अमृतचंद्र आचार्य की टीका वाला समयसार' खोजना।

www.JainKosh.org

परीक्षा: लक्षण को सत्य की कसौटी पर कसना

लक्षण में दोषों का परिहार करना।

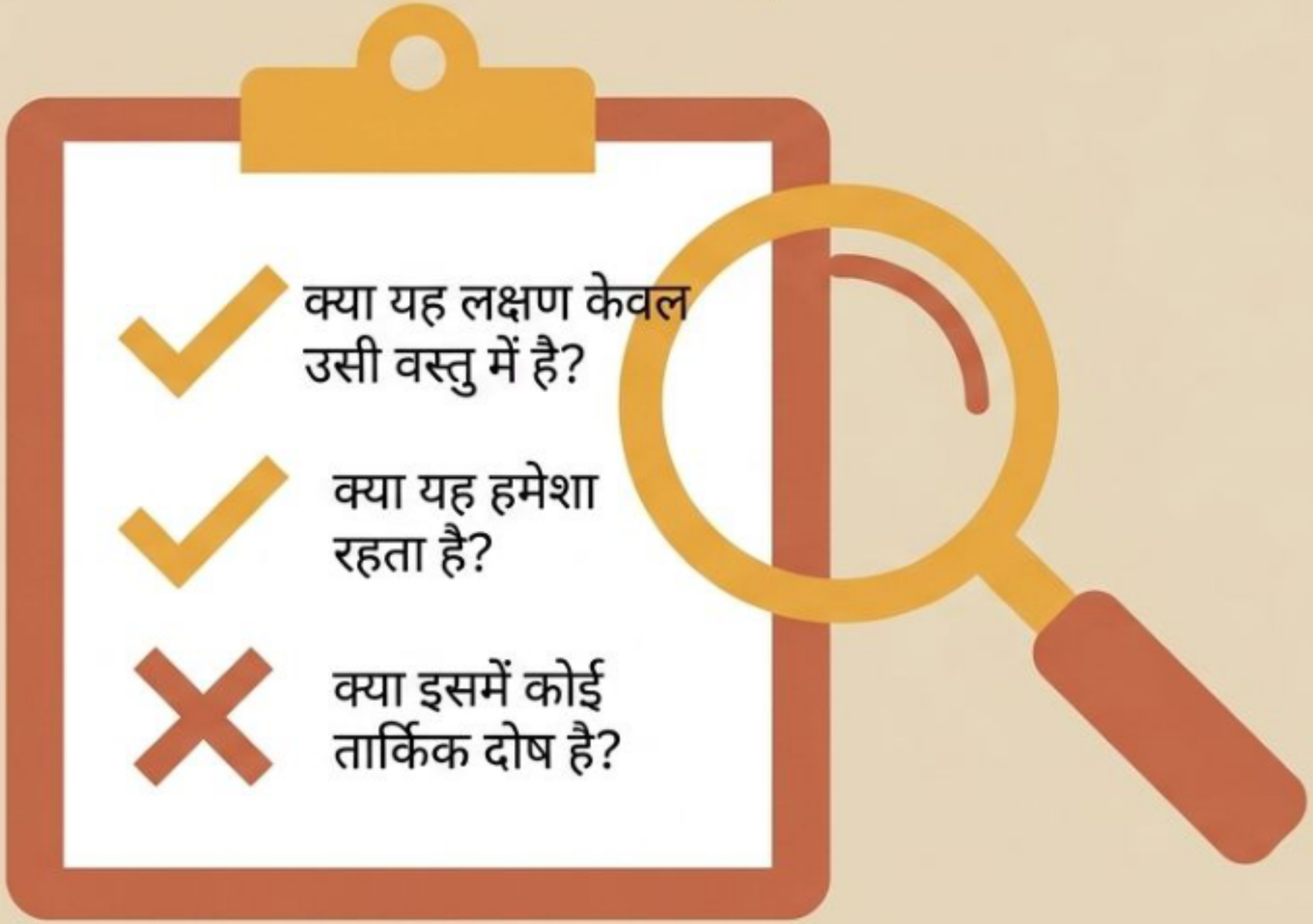

बिना परीक्षा के सही और गलत वस्तु का निर्णय (विवेचन) असंभव है। आपने जो लक्षण बताया है, वह निर्दोष है या सदोष, इसका निर्णय परीक्षा से ही होता है।

www.JainKosh.org

एक अटूट तार्किक क्रम जिसके बिना सत्य निर्णय असंभव है

शास्त्र हो या सब्जी मंडी (लौकी/ककड़ी खरीदना), बिना इस त्रि-स्तरीय प्रक्रिया के कोई भी सही निर्णय नहीं लिया जा सकता।

www.JainKosh.org

लक्षण के दो मुख्य प्रकार

लक्षण
(Definition)

आत्मभूत लक्षण
(Inherent)

जो वस्तु के स्वरूप (Nature) में पूरी तरह मिला हुआ हो।

अनात्मभूत लक्षण
(Incidental)

जो वस्तु के स्वरूप से भिन्न हो, फिर भी पहचान कराता हो।

www.JainKosh.org

आत्मभूत लक्षण: जो वस्तु के स्वरूप में अखंड रूप से समाहित हो

जो वस्तु के स्वरूप में प्रवेश कर चुका हो, जिसे किसी भी स्थिति में अलग न किया जा सके (तादात्म्य संबंध)।

पूर्ण तादात्म्य (Total Fusion)

अग्नि (लक्ष्य)

उष्णता (लक्षण)

उष्णता अग्नि का स्वरूप ही है। यह जल आदि अन्य पदार्थों से अग्नि को अलग करती है। उष्णता को अग्नि से कभी छीना या अलग नहीं किया जा सकता।

www.JainKosh.org

अनात्मभूत लक्षण: जो स्वरूप से बाहर रहकर भी पहचान कराए

जो वस्तु के स्वरूप में शामिल नहीं है, भिन्न है, फिर भी भीड़ में वस्तु को अलग करने में मदद करता है (संयोग संबंध)।

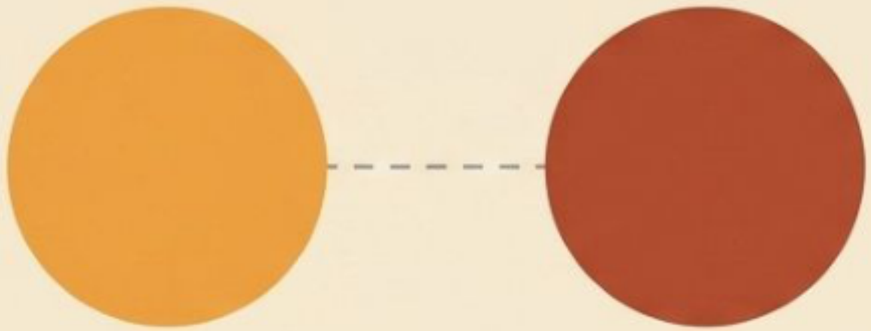

संयोग संबंध (Association)
अस्थायी जुड़ाव (Temporary Connection)

पुरुष
(लक्ष्य)

दंड / डंडा
(लक्षण)

डंडा पुरुष का शरीर या स्वरूप नहीं है। डंडा छूट सकता है, बदल सकता है। फिर भी 'डंडे वाले दादाजी' कहने पर भीड़ में उस विशिष्ट पुरुष की सटीक पहचान हो जाती है।

www.JainKosh.org

आत्मभूत और अनात्मभूत लक्षण का तुलनात्मक विश्लेषण

आधार	आत्मभूत लक्षण	अनात्मभूत लक्षण
स्वरूप (Nature)	वस्तु के भीतर, अनुप्रविष्ट	वस्तु के बाहर, भिन्न
संबंध (Relationship)	तादात्म्य (Inseparable)	संयोग (Incidental)
स्थायित्व (Permanence)	त्रैकालिक, हमेशा रहता है	अस्थायी, बदल सकता है
शास्त्रीय दृष्टांत (Example)	अग्नि की उष्णता	दंडी पुरुष (पुरुष का डंडा)

www.JainKosh.org

हम स्वयं को कैसे पहचानते हैं? (अनात्मभूत भ्रांतियां)

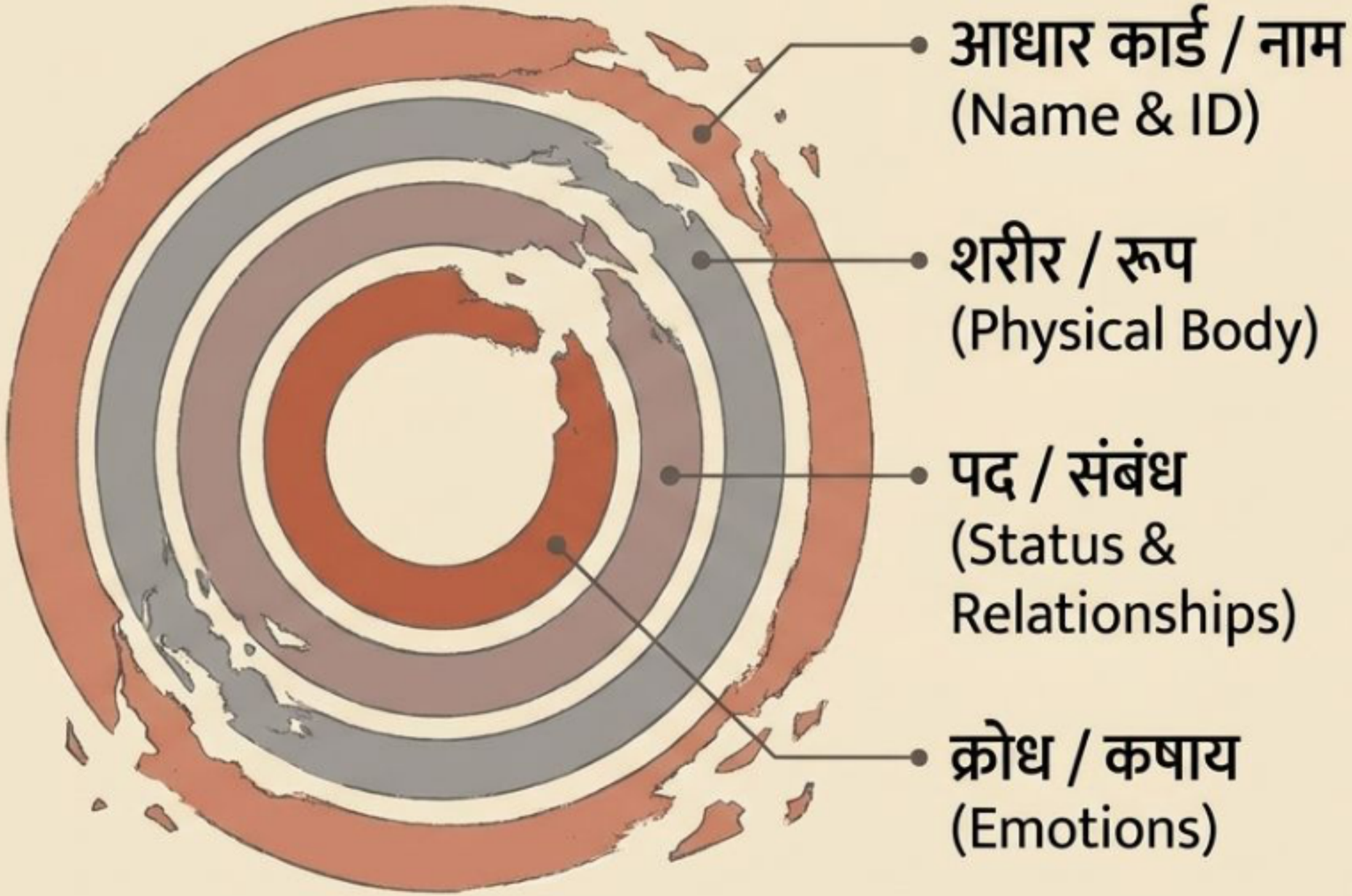

ये सभी अनात्मभूत लक्षण हैं।

यह हमारी सच्ची पहचान नहीं है क्योंकि यह सब बदल जाता है। शरीर, नाम और पद आत्मा के स्वरूप में प्रविष्ट नहीं हैं। यदि इन्हें आत्मा मान लिया, तो मृत्यु के बाद आत्मा की पहचान ही मिट जाएगी।

www.JainKosh.org

आत्मा का त्रैकालिक आत्मभूत लक्षण: उपयोग (जानना-देखना)

सदा एक रस

'सणो जीवो लक्षणं' – सर्वज्ञ ने देखा है कि मनुष्य, देव, या सिद्ध अवस्था—हर हर गति में यह लक्षण कभी अलग नहीं होता।

उपयोग

(चेतना / Consciousness)

तादात्म्य संबंध

जानना-देखना ही आत्मा का स्वरूप है। यह शरीर और राग-द्वेष की तरह छूटता नहीं है।

अपनी अनात्मभूत पहचानों (शरीर, पद) को छोड़कर, अपने इस **आत्मभूत लक्षण** (ज्ञान-दर्शन) का अनुभव करना ही **आत्म-कल्याण** का मार्ग है।

www.JainKosh.org